पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आपको पता होना चाहिए कि प्रेम आत्मिक होता है, लेकिन आज सभी शारीरिक आकर्षण को प्यार की संज्ञा देते हैं, नाम देते हैं। लेकिन वह ऐसा होता, तो हमेशा चलता, कुछ महीनों, कुछ साल में खत्म नहीं हो जाता। आपको एहसास भी नहीं होगा कि आज मानव का प्रेम दैहिक है, न कि आत्मिक। जिससे देखिए पैदा क्या होता है!

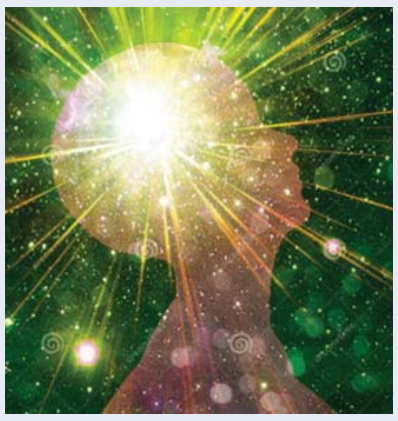

जब भी किसी स्त्री/पुरुष का चित्र हमारे मन के पर्दे पर आता है, उससे अशुद्धता ही आती है। मानव प्रेम जब शुद्ध होता, तब वह प्रेम है, लेकिन जैसे ही वह विकृत होता, या बिगड़ता, तो वो विकार में परिवर्तित हो जाता है।

मानव प्रेम विकृत होकर या बिगड़कर जब देह केन्द्रित होता, अर्थात् वासना, भोग का रूप लेता है, तभी वह काम विकार कहलाता है। जब वह दैहिक सम्बन्धों में पूर्णतः अनुरागात्मक हो जाता है, तो उसे 'मोह' कहा जाता है। मोह के कारण धन के प्रति लालसा बढ़ जाती है, जिसे हम लोभ की संज्ञा देते हैं। प्रेम की विकृति विकार है, उससे ही क्रोध की उत्पत्ति है, जब काम वासना, लोभवृत्ति, मोह ममत्व, स्वार्थ भाव तृप्त न हो।

कुल मिलाकर जितने भी एक्सपेक्टेशन्स (इच्छाएँ) हैं, यदि उनकी पूर्ति ना हो, वो तृप्त न हो। आप सोचिए मन की आशाएँ हैं, अर्थात् वह विकारी हैं। अंग्रेज़ी में भी कहते हैं कि गुस्सा कब आता है, जब

मन की व्यथा को कुछ अलग तरह से विस्तार करने की आज हम कोशिश करते हैं। जो कुछ भी उपजता है, वह मन से शुरु होता है, और मन पर ही खत्म हो जाता है। आज जीवन कुछ ऐसा ही तो है, जो कुछ कर रहा है, वो मन ही कर रहा है, अर्थात् हम ही कर रहे हैं, कोई और नहीं!

'एक्सपेक्टेशन्स डू नॉट मैच विद रियलिटी'।

जबकि प्यार या प्रेम मानव की अपनी नेचर है, उसमें ही वह पला बढ़ा है। वो उसका अपना मूल स्वभाव है। जब व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ दैहिक रूप से जुड़ता है तो उसके अंदर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा पैदा हो जाती है। जब काम वासना, मोह, ममता, लोभ वृत्ति आदि की पूर्ति होने में बाधा उत्पन्न होती है। पहले जिसे वह मोहब्बत करता है, उसी से वह घृणा करने लग जाता है। उसी में अवगुण ढूंढ़ने लग जाता है, उसी की निंदा भी शुरु कर देता है, उसके अंदर वैर-विरोध, वैमनस्य पैदा हो जाता है।

आप देखो मन क्या कर रहा है, या ऐसे कहें कि हम क्या कर रहे, बस कारण को नहीं समझ पा रहे। गलती क्या हो रही है, बस समझ नहीं पा रहे हैं। जो चीज़ दिखाई दे रही है, उसे परमानेंट मानकर उससे सम्बन्ध जोड़ना चाहते। ये सब तो पहले भी देखा था ना। इसी को साइंटिफिकली देखें तो हम नाम देते हैं, देह-अभिमान या ईगो। अर्थात् उन चीज़ों से जुड़ना जो हम नहीं हैं तथा जो हमारे नहीं हैं। आपको थोड़ा समझ आ रहा है, हम क्या कहना चाह रहे हैं। बस हमें यही समझना है कि अभिमान, स्वतंत्र रूप से कोई विकार नहीं है, लेकिन जब किसी न किसी रूप से काम, लोभ, मोह वृत्ति की जब तृप्ति होती जाती है, उसी को अभिमान कह दिया।

यदि आसान शब्दों में कहा जाये तो कह सकते हैं कि जब किसी से कोई काम कहें काम वश, क्रोध वश, लोभ वश, और व्यक्ति कर दे तो हम खुश हो जाते हैं, कहते हैं, देखा मैंने ऐसे किया। वह संतुष्ट महसूस करने लग जाता है। आप बताओ ये कब तक चलेगा! कभी न कभी तो वो मना करेगा, तब आप दुःखी होने लग जाते हैं। दुःख या सुख किससे है, जो सही नहीं है वो सही लगता है। बस यही तो समझ है।

मन को वैसे तो सब समझ आता है, बस उसे हमें विज्ञान या साइंटिफिक बनाने की ज़रूरत है। कोई भी हमें दुःख सुख नहीं दे रहा, हम दुःख सुख ले रहे हैं। मन की अद्भुत शक्तियों का प्रयोग करने के लिए हमें थोड़ा देह, देह के सम्बन्धों से बुद्धि निकाल अपनी शक्तियों को जागृत करने की आवश्यकता है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-12-2017

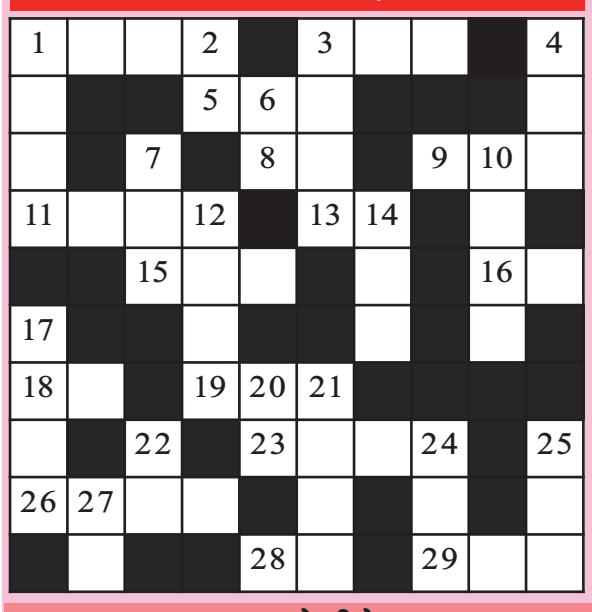

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. परेशानी, संकट, कष्ट (4)
2. थोड़ा, अल्प (2)
3. पर्वतों का राजा (4)
4. ब्रह्मा की संतान....हो, चार वर्णों में से एक वर्ण (3)
6. भलाई, उपकार, फायदा (2)
7. शिक्षा, समझानी (3)
10. मन को लुभाने वाला, सुन्दर (4)
12. तुम बच्चों को....है मुझ बाप को याद करो, आज्ञा (4)
14. लेकिन, परंतु, घड़ियाल (3)
17. बाबा को सर्वव्यापी अथवा कच्छ मच्छ....कहना यह भी ग्लानी है (4)
20. विशुद्ध, सच्चा, खालिस (2)
21. राम की कथा पुस्तक, महान धर्मग्रन्थ (4)
22. गुण सम्पन्न, हुनरमंद, गुणवान (2)
24. सीताजी के पिता (3)
25. साधना करने वाला (3)
27. अहंकार, अहं (2)

बायें से दायें

1. जो बीता कल्प पहले...., अनुसार (4)
3. ....का एक कदम बढ़ाओ, हज़ार कदम बाप साथ में है (3)
5. गुणगान, अंदर में बाप की....के गीत गाते रहो (3)
8. तला, पेंदा (2)
9. विहार करने वाला, घूमना-फिरना (3)
11. दुःख, कष्ट, संकट (4)
13. मृत्यु का देवता, यमराज (2)
15. ....तेरी गली में जीना तेरी गली में (3)
16. ....बच्चे हैं फूल सदा मुस्काते हैं (2)
18. दूल्हा, साजन, प्रीतम (2)
19. नाज़ अदा, हाव-भाव (3)
23. रामानंद के गुरू, राम के छोटे भाई (4)
26. मनोहर, सुंदर (4)
28. युद्ध, लड़ाई (2)
29. सोना, गेहूँ, अक (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

सोनीपत-हरियाणा। सेक्टर 15 के डी.ए.वी. मल्टीपर्पस स्कूल में हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित गीता जयंती समारोह के कार्यक्रम में स्पीकर कंवरपाल गुर्जर द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन।

झालावाड़-राज.। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सशक्त बनाओ' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला प्रमुख टीना भील, सी.एम.एच.ओ. डॉ. साजिद खान, डॉ. इकबाल पठान तथा ब्र.कु. मीना।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। ईद-ए-मिलाद के अवसर पर रूहानी इल्म के ज़रिए 'जन्नत से जहन्नुम की रहनुमाई' डिज़िटल प्रदर्शनी के आयोजन पर स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए एम.जी. पॉलिटेक्निक के मैकेनिकल विभाग के विभागाध्यक्ष इंजीनियर नसिरुद्दीन। साथ हैं ब्र.कु. कैप्टन अहसान सिंह तथा ब्र.कु. शान्ता।

कादमा-हरियाणा। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नाबार्ड के सहायक महाप्रबंधक सोहनलाल जी, हरियाणा के पूर्व उपनिदेशक डॉ. दलीप सांगवान, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. वसुधा तथा अन्य।

बहल-हरियाणा। मधुमेह नियंत्रण के कार्यक्रम 'मधुर मधुमेह' के समापन अवसर पर मंचासीन हैं डॉ. वलसलन नायर, महंत विकास गिरी जी महाराज, डॉ. सुरेन्द्र सागवान, सरपंच गजानंद अग्रवाल, ब्र.कु. शकुंतला तथा ए.एस.आई. कृष्णन पड़गद।

केन्द्रापाड़ा-ओडिशा। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं ब्र.कु. सुलोचना, तहसीलदार हेमलता बहालिया, डी.आई.पी.आर.ओ. चन्द्रकान्त नायक, ब्र.कु. गीतांजलि तथा अन्य।